10-08-99

पतिव्रता और पितावता बनने का दृढ़ संकल्प लो

आज जब मैं अमृतवेले आप सब समर्पित भाईयों की याद लेकर बाबा के पास वतन में गई तो बाबा मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा कि बच्ची आप अकेली आई हो या साथ में भट्ठी के सभी पाण्डवों को भी लाई हो? तो मैंने कहा - बाबा, आपकी तो यह जादू की नगरी है, आप तो सेकण्ड में सबको इमर्ज कर देते हैं। तो बाबा ने एक सेकेण्ड में ही सबको वतन में इमर्ज किया और दृष्टि देते हुए कहा कि 'यह मेरे दिल के दीपक हैं'। दिल का महत्त्व होता

है ना। तो हमेशा याद रखना कि हम दिल के दीपक - कभी बुझें नहीं, टिम-टिमाये नहीं, सदा जो भट्टी की वा ब्राह्मण परिवार की मर्यादायें हैं, वह कायम रहें। फिर बाबा ने सभी भाईयों को एक टाईटल दिया कि – ‘‘यह सब मुझ परमात्म राम की संगमयुगी सच्ची सीतायें हैं’’। तो हरेक समझे कि - मैं परमात्म-राम की सच्ची संगमयुगी सीता हूँ। चाहे कोई भी माया का रूप ले करके हमें मर्यादा की लकीर से दूर करने आये लेकिन मन, वाणी और कर्म से एक राम की ही रहना है। अपने से संकल्प करो कि ‘‘मर जायेंगे, मिट जायेंगे लेकिन आत्मा सीता एक की लगन में, स्वप्न में भी पिताव्रता, पतिव्रता का जो व्रत है, यह नहीं तोड़ेंगे।’’ सच्ची सीता होकर रहेंगे। ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा अपने से, बापदादा के कमरे में जा करके दिल से हर एक को करनी है।

उसके बाद बापदादा ने कुमारों के २५-२५, ३०-३० के ग्रुप बनवाये और उस एक-एक ग्रुप को अपनी बाहों में समाया और दिल से लगाते यही बोला कि ‘‘दिल में रहने वाले दिल से कभी दूर नहीं होना।’’ तो सभी खुशी में फूले नहीं समा रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे नदी सागर में समा जाती है, ऐसे सभी अव्यक्त मिलन में समाये हुए थे।

इसके बाद बाबा ने सभी समर्पित भाईयों को एक खेल कराया। तो खेल चेयर्स का था। हरेक चेयर पर भिन्न-भिन्न स्लोगन लिखे हुए थे। एक पर लिखा था -१. शुभ सोचना है। २- दूसरे पर लिखा था – ‘‘कम बोलना और मीठा बोलना है।’’ ऐसे ही ३. सदा मुस्कराते रहना। ४. उड़ती कला में उड़ते रहना। ५. कर्म करते आत्मा मालिकपन की स्मृति में रहना। ६. कोई भी विघ्न को पेपर समझ खुशी से पार करना। ७. कभी किसी के व्यर्थ, कमज़ोर संस्कार को देख मूड ऑफ नहीं करना। ८. किसी से घृणा नहीं करना, क्षमा करना, शुभ भावना रखना। और ९. संकल्प में भी किसी आत्मा के प्रभाव में नहीं आना।

ऐसे यह ९ बातें जो हैं वह फिर से रिपीट-रिपीट कुर्सियों पर लिखी हुई

थीं। तो बाबा ने कहा - अच्छा, अभी दौड़ लगाओ। तो सभी कुर्सियों के चारों ओर ग्रुप में दौड़ी लगाने लगे। जितने दौड़ने वाले थे उतनी ही कुर्सियाँ थी। फिर बाबा ने सीटी बजाई तो हरेक अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठ गये और अपना स्लोगन पढ़ने लगे। तो बाबा ने सबको दृष्टि देते हुए कहा कि यही पाण्डवों के प्रति गॉडली गिफ़्ट है, जो हरेक को बाबा दे रहा है। वैसे तो सब बातें ध्यान में रखनी हैं लेकिन यह विशेष वरदान सदा कार्य में लगाते रहना। ऐसे ही खेल कराते हुए बाबा ने लास्ट में हमें भी दृष्टि दी और हम स्थूल वतन मे पहुँच गई। ओमशान्ति।